"कोविड–19 महामारी एवं भारत की विदेश नीति"

डॉ. योगेन्द्र कुमार धुर्वे
सहा. प्राध्या–राजनीति विज्ञान
शासकीय महाविद्यालय गुरूर, जिला बालोद (छ.ग.)

सारांश :

वर्तमान में संपूर्ण विश्व कोविड–19 महामारी (कोरोना) से जूझ रहा है। यह एक ऐसी परिस्थिति है जिसके कारण विश्व के बडे राष्ट्रों ने कोविड–19 के सामने घुटने टेक दिए है। विश्व की महाशक्ति कहे जाने वाले अमरीका से लेकर फांस, ब्राजील, ब्रिटेन, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, इटली, रूस, चीन आदि ने कोविड–19 का कहर झेला है। चीन से शुरू हुई कोविड–19 महामारी की पहली लहर, तपश्चात् ब्रिटेन एवं भारत से दूसरी लहर ने संपूर्ण विश्व को चिन्ता में डाल दिया है। कोविड–19 के संकट ने विश्व की लगभग सभी अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्रों को भारी क्षति पहुंचाई है और आज भी वे देश इस महामारी से पार नहीं पा सकें है। कोविड–19 ने दुनियाँ के देशों में अपना कहर बरपाया तथा अर्थव्यवस्था को हिला कर रख दिया। कोविड–19 से बचाव एवं सुरक्षा को दृष्टि में रखकर लॉकडाउन एवं टीकाकरण के सकारात्मक परिणाम मिले हैं।

प्रस्तावना :

कोविड–19 का प्रकोप 21 वीं शताब्दी की सबसे भयावह घटना है। कोविड–19 महामारी के वैश्विक एवं व्यापक प्रसार ने विश्व के सभी राष्ट्रों की सभी प्रकार की गतिविधियों को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया है। कोविड–19 का प्रभाव आज विश्व में आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से स्पष्टतः देखा जा सकता है। इस अवधि में भारत देश में निर्मित आवश्यक सामग्री, दवाईया और वैक्सिन की निःशुल्क आपूर्ति अपने पड़ौसी देशों के साथ–साथ विश्व के विकसित और अविकसित देशों को की है जिसे वैक्सीन मैत्री की उपमा दी गई। इस प्रकार कोरोना काल में भारत में अपनी विदेश नीति को नया आयाम प्रदान किया गया।

कोविड–19 महामारी की शुरूवात :

कोविड–19 महामारी की शुरूवात आधिकारिक तौर पर दिसंबर 2019 को चीन के शहर वुहान में हुई थी।[1] धीरे–धीरे इस महामारी ने विश्व के लगभग 116 देशों को अपनी चपेट में ले लिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 11 मार्च 2020 को कोविड–19 को इसकी विकरालता के कारण वैश्विक महामारी घोषित किया है।[2] चीन के वैज्ञानिको ने वुहान इस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी में कोविड–19 वायरस को तैयार किया। एक नई स्टडी में ये सनसनी खेज दावा किया गया है कि चीनी वैज्ञानिकों ने वायरस को तैयार करने के बाद इसे रिवर्स इंजिनियरिंग वर्जन से बदलने की कोशिश की ताकि ऐसा लगे कि यह वायरस चमगादड से विकसित हुआ है। अमेरिका और ब्रिटेन विश्व स्वास्थ्य संगठन पर इस मामले के जांच के लिए दबाव बना रहे है। इस स्टडी को ब्रिटिश प्रोफेसर एंगस डल्गलिश और नार्वे के वैज्ञानिक डॉ. बिर्गर सोरेनसेन ने किया है।[3]

कोविड–19 वायरस क्या है :

यह वायरस का एक प्रकार है, जो सामान्य रूप से स्तनधारियों के श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है। इसमें मानव समुदाय भी सम्मिलित है। पहले इस वायरस को SARS-Cov-2 नाम दिया गया, बाद में कोविड–19 नाम से इसका नामकरण किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (OIE) और खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा वर्ष 2015 में जारी दिशा–निर्देशों के तहत् किया गया है। कोविड–19 वायरस का एक बडा परिवार है, जो मानव या जानवरों में बीमारी का कारण बनता है।[4]

कोविड–19 से संबंधित मुख्य घटना क्रम :

- कोविड–19 वायरस की पहचान सर्वप्रथम दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में शुरू हुई इस महामारी के लिए जिम्मेदार विषाणु को "नोवल कोरोना वायरस (n cov) नाम दिया गया।"

- यह सीवियर एक्युट रेस्पिरेटरी सिण्ड्रोम (SARS) तथा मिडल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिण्ड्रोम (MERS) के समान है। इसका संचरण पशुओं से मानव में हुआ है।
- SARS Cov पहली बार वर्ष 2002 में दक्षिण चीन के ग्वांगडोंग प्रांत में मानव में संक्रमण के रूप में पाया गया।
- पोलिमरेज चेन रिएक्शन (PCR) टेस्ट कोविड–19 वायरस के लिए पहला परीक्षण है, जिसके तहत् सभी संदिग्ध रोगियों का परीक्षण किया जाता है।
- यदि इस परीक्षण में परिणाम सकारात्मकर रहता है तो पुष्टि के लिए नमुना पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान को भेजा जाता है। जो कि वर्तमान में भारत में जीनोम अनुक्रमण करने वाली एकमात्र सरकारी प्रयोगशाला है।
- ऐसे स्थान जहां मनुष्यों और जानवरों में अनियमित रक्त और अन्य शारीरिक संपर्क जैसा संबंध स्थापित होता है वहाँ कोविड–19 वायरस का अधिक प्रसार होता है।
- चीन के लगभग 1.4 बिलियन पशुधन की उपस्थिति के कारण यह देश कोविड–19 वायरस के लिए अनुकूल साबित हुआ।
- चीन के बाजारों में कई जानवरों का माँस बिकने व उपयोग करने के कारण ये बाजार मानव में वायरस की प्राथमिकता को बढ़ा देते है।[5]

कोविड–19 कैसे फैलता है :

कोविड–19 वायरस खॉसी या छींक आने पर नाक या मूँह से निकलने वाले तरल पदार्थ की छोटी से छोटी बूँदो के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। यह रोग किसी संक्रमित व्यक्ति के खॉसने या छीकने से हवा में फैलता है। नाक या मूँह से निकले तरल पदार्थ, बूंदो के रूप में यदि किसी सतह पर टिके रहते है तो उस सतह को स्पर्श करने के बाद यदि कोई व्यक्ति अपने मूँह, नाक या ऑख को स्पर्श करता है तो यह वायरस उस व्यक्ति को अपनी चपेट में ले लेता है। मानव शरीर में वायरस के प्रवेश एवं बाहर निकलने के प्रमुख स्त्रोत – मूँह, नाक और ऑख है।[6]

कोविड–19 से संक्रमण के लक्षण :

कोविड–19 के कारण ''रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट'' यानी श्वसन तंत्र में हल्का इंफेक्शन हो जाता है जैसा कि सामान्य सर्दी–जुकाम में देखने को मिलता है। इस बीमारी के लक्षण बेहद सामान्य है – नाक बहना, सिर में तेज दर्द, सूखी खॉसी, गले में खराश व दर्द, थकान व उल्टी महसूस होना, श्वांस लेने में तकलीफ, स्वाद व सूंघने की शक्ति का अभाव होना आदि।[7]

कोविड–19 से बचाव के लिए सरकार के संवैधानिक अधिकार :

कोविड–19 जैसे महामारी से बचने के लिए भारत सरकार द्वारा निम्नांकित कानूनों में दिये गये अधिकारों व शक्तियों का प्रयोग किया जाता है–

महामारी रोग अधिनियम – 1897 :

124 वर्ष पुराना यह कानून केन्द्र व राज्य सरकार को महामारी से निपटने के लिए विशेष अधिकार प्रदान करता है। वर्ष 1986 में जब बम्बई शहर में प्लेग महामारी फैली जिसमें हजारों लोगों की मृत्यु हुई उस स्थिति में 4 फरवरी 1897 महामारी रोग अधिनियम लागू किया गया। ब्रिटिश सरकार को बड़ी संख्या में लोगों को इकट्ठा होने से रोकने की शक्ति प्रदान करता था। इस अधिनियम की धारा 2(1) राज्य को उस स्थिति में विशेष अधिकार प्रदान करती है। जब राज्य सरकार को यह लगे कि खतरनाक महामारी के प्रभाव को रोकने के लिए राज्यों की साधारण शक्तियाँ अपर्याप्त है, तब राज्य सरकार इस कानून के तहत् बीमारी से बचाव के लिए आवश्यक उपाय व नियमों का निर्माण कर सकती है। इस अधिनियम की धारा 2(2) के तहत् राज्य सरकार अपने राज्य की सीमाओं के भीतर प्रवेश करने वाले नागरिकों के निरीक्षण के संबंध में नियम बना सकती है।

यदि निरीक्षण के दौरान कोई नागरिक महामारी से संक्रमित पाया जाता है तो सरकार उसे स्थायी आवास (वर्तमान में क्वैरेन्टाइन) में भेज सकती है।[8]

कर्नाटक भारत का पहला राज्य बना जिसने 11 मार्च 2020 को इस कानून को लागू किया। इसके पश्चात् हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली, गोवा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और अन्य राज्यों में महामारी रोग अधिनियम 1897 लागू किया गया।[9]

राष्ट्रीय आपदा अधिनियम 2005 :

यह अधिनियम केन्द्र सरकार से लेकर जिला और स्थानीय स्तर पर आपदा प्रबंधन योजना को तैयार करने, लागू करने और निष्पादित करने के लिए विस्तृत कार्ययोजना प्रदान करता है। इस अधिनियम के तहत् केन्द्र, राज्य व जिला स्तर पर भिन्न–भिन्न प्राधिकरणों की स्थापना का प्रावधान किया गया। (धारा–3 राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, धारा–14 राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, धारा–25 जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण)।

आपदा प्रबंधन के लिए धारा–42 के तहत् एक राष्ट्रीय संस्थान के गठन का प्रावधान इस अधिनियम में किया गया है। यह राष्ट्रीय संस्थान आपदा प्रबंधन के लिए अनुसंधान व कर्मियों को प्रशिक्षण देने का कार्य करता है।

भारत मे ''राज्य सरकार'' आपदाओं से निपटने के लिए प्रमुख रूप से जवाबदेह है। जबकि केन्द्र सरकार लॉजिस्टिक्स और वित्तीय सहयोग बढाकर राज्य सरकारों की सहायता करती है। जैसे – राज्य सरकारों को तत्काल राहत देने के लिए राज्य आपदा राहत कोष में आर्थिक अनुदान देना, सामाजिक क्षेत्र में आवश्यक बुनियादी ढाँचे व सार्वजनिक संपत्ति की बहाली करना, आपदा प्रबंधन हेतु अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराने के लिए केन्द्रीय स्तर पर एक राष्ट्रीय आपदा आकस्मिकता कोष का गठन करना ताकि भारत का कोई भी नागरिक उसमें आर्थिक मदद दे सकें।[10]

आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 :

1 अप्रैल 1955 में लागू यह अधिनियम केन्द्र सरकार को किसी भी आवश्यक वस्तु के मुक्त प्रवाह को बनाये रखने के लिए या उसे उचित कीमतों पर उपलब्ध कराने के लिए सरकार को उस वस्तु के नियमण की शक्ति प्रदान करता है। यह अधिनियम केन्द्र सरकार को किसी भी वस्तु को सार्वजनिक हित में इस सूची में शामिल करने या हटाने की शक्ति प्रदान करता है। सरकार आमतौर पर खाद्य उत्पादों की मुल्यवृद्वि को नियंत्रित करने के लिए इस अधिनियम का प्रयोग करती है, परन्तु कोविड–19 जैसी महामारी में सैनिटाइजर व मास्क की माँग तीव्रता से बढ़ी और स्वाभाविक है कि इन उत्पादों के मुल्यों में वृद्धि हुई अतः उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने इस अधिनियम के तहत् अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए 30 जून 2020 तक की अवधि के लिए सैनिटाइजर व मास्क को आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 के दायरे में रखा।[11]

कोविड–19 की जांच प्रक्रियां :

भारत में वैश्विक स्वास्थ्य मानकों के मुताबिक अभी तक दो तरह की नैदानिक जाँच की जाती है वह इस प्रकार है –

01. RT-PCR (रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन पॉलीमरेज चेन रिएक्शन) :–

- यह परीक्षण प्रयोगशाला की एक तकनीक है जिसमे RNA का DNA में रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन किया जाता है, जिसमे विषाणु का पता चलता है।
- RT-PCR में देखा जाता है कि वायरस मौजूद है या नहीं, इसके लिए व्यक्ति की श्वास नलीं से एक नमूना लिया जाता है या फिर गले अथवा नाक से नमूना लेकर जाँच की जाती है।
- परिणाम आने में 12 से 24 घंटे लगते है।
- RT-PCR जाँच में अधिक समय लगने के साथ–साथ जाँच महंगी भी है, क्योंकि उसकी किट में कई चींजे शामिल होती है।

02. रैपिड एंटीबॉडीज :–

- इस परीक्षण में रक्त का इस्तेमाल होता है और इसमें वायरस पर शरीर की प्रतिक्रिया देखी जाती है।
- रैपिड एंटीबॉडीज में देखा जाता है कि कोरोना वायरस के संक्रमण की प्रतिक्रियां में एंटीबॉडीज बनती है या नहीं। यह जाँच सामान्य तौर पर हॉटस्पाट क्षेत्रों में की जाती है।
- नतीजे आने में 20 से 30 मिनट लगते है।
- रैपिड एंटीबॉडीज परीक्षण साक्षेप रूप से कम महंगी होती है।[12]

कोविड–19 के विस्तार के चरण :

- चरण–1 इस चरण को प्रारंभिक चरण कहा जाता है। चरण–1 में संक्रमण उन लोगो में पाया जाता है, जो विदेश की यात्रा करके आये होते है। भारत इस चरण में उस समय प्रवेश कर गया था, जब राजस्थान में इटली के पर्यटकों में संक्रमण पाया गया।
- चरण–2 इस चरण में संक्रमण उन लोगों में पहुँच जाता है, जो विदेश की यात्रा करके आये लोगों के संपर्क में आते है। 25 मार्च 2020 से भारत इस चरण में प्रवेश कर चुका है।
- चरण–3 इस चरण को सामुदायिक संक्रमण भी कहा जा सकता है। इस चरण में संक्रमण के लक्षण उन लोगो में पाया जाता है, जो सीधे संक्रमण बहुलता वाले देशों की यात्रा किये व्यक्तियों के संपर्क में नहीं आये होते है। इस चरण में बडे पैमाने पर संक्रमण का प्रसार समुदाय में होता है। वर्तमान में भारत पर इस चरण में चले जाने का खतरा मंडरा रहा है।
- चरण–4 यह महामारी का अंतिम चरण होता है। इस चरण में वृहद पैमाने पर संक्रमण का प्रसार हो चुका होता है और इस चरण में घातांकी रूप में पक्के मामले पाये जाते है। साथ ही लोगों की मौत भी इसी पैमाने पर होती है। वर्तमान में इटली, अमरीका, स्पेन, भारत आदि देश इसी चरण में हैं।[13]

कोविड–19 से रोकथाम एवं बचाव के उपाय :

कोविड–19 संक्रमण से बचने हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी दिशा–निर्देश :–

- एक दूसरे से संपर्क में आने से बचें और दो गज की सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करें।
- घर के बाहर निकलते समय मुँह पर मास्क लगाएं तथा हाथ में हैण्ड ग्लब्स अवश्य पहनें।
- खॉसते या छींकते समय अपने मुँह और नाक को अच्छी तरह से ढकें।
- एल्कोहॉल युक्त सैनिटाइजर का प्रयोग करें।
- समय–समय पर कम से कम 20 सेकेण्ड तक अपने हाथों को अच्छी तरह से धो लें।
- सार्वजनिक स्थानों पर पान, गुटखा खाकर न थूकें।
- बस, ट्रेन इत्यादि में सफर करने से बचें।
- ऑफिस कार्य से बाहर जाएं तब भी सोशल डिस्टेन्सिंग का ध्यान रखें।
- मास्क को हाथ से बार–बार न छुएं, इसे पहनते या उतारते समय फीते या रबर का प्रयोग करें।
- किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने के बाद स्वयं को परिवार और समाज से कम से कम 14 दिनों तक अलग रखें।
- घर से बाहर की खुली खाद्य वस्तुओं का सेवन न करें।
- जहाँ तक संभव हो गर्म पानी एवं खाद्य पदार्थो का ही सेवन करें।
- घर में लाई गई किसी भी वस्तु को पहले सैनिटाइज करें फिर उनका इस्तेमाल करें।
- हाथ मिलाने के स्थान पर दूर से अभिवादन करें।
- मोबाईल व लैपटॉप की समय–समय पर सफाई करते रहें।

- अपने शरीर के तापमान और श्वसन लक्षणों की जाँच नियमित रूप से करते रहें।
- अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए अपनी डाइट में पौष्टिक चीजों को शामिल करें।
- कोविड–19 के लिए कोई विशिष्ट उपचार दवाईयां या टीके उपलब्ध नहीं है। उपचार हेतु सबसे उपयुक्त उपाय आराम करना, समय–समय पर स्वास्थ्य आहार और उचित तथा पर्याप्त नींद लेना आवश्यक है।
- बहुत आवश्यक होने पर ही घर से बाहर निकलें।[14]

भारत मे कोविड–19 से निपटने के लिए कार्यवाहियां :

- विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से सहायता जैसे – प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, जनधन खाता के माध्यम से नकद आर्थिक सहायता, खाद्य सुरक्षा के तहत् अनाज, मनरेगा रोजगार सृजन में सहायक, उज्जवला योजना के माध्यम से फ्री गैस सुविधा।
- लॉकडाउन अथवा पूर्णबंदी एक आपातकालीन प्रोटोकॉल है जिसमें कण्टेनमेण्ट जोन का निर्धारण करना शामिल है।
- जागरूकता ऐप्प– जैसे आरोग्य सेतु ऐप्प, चैटबोट–प्रधानमंत्री ने वाट्सअप चैटबोट से जुड़ने की घोषणा की थी। कोविड–19 लोकेट ऐप्प गोवा सरकार द्वारा लॉच, COVA पंजाब ऐप्प–पंजाब सरकार द्वारा नागरिकों को जागरूक करनें के लिए लॉच, Gok Direct ऐप्प यह केरल सरकार द्वारा नागरिकों कों जागरूक करने के लिए लॉच, आपुर्ति सुविधा ऐप्प नोएडा प्राधिकरण द्वारा लॉच।[15]

भारत में कोविड–19 का टीकाकरण :

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 16 जनवरी 2021 को विडियों कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से कोविड–19 टीकाकरण के प्रथम चरण की शुरूवात की गई। यह विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने ''दवाई भी और कड़ाई भी'' का नारा दिया। भारत में वैक्सीन के रूप में दो वैक्सीन ''कोविशील्ड'' और ''कोवैक्सीन'' को अपनाया गया है।[16]

कोविड–19 का भारत एवं अन्य देशों पर प्रभाव :

कोविड–19 महामारी ने भारत को बहुत अधिक प्रभावित किया। इसने जहाँ एक ओर भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक व्यवस्था, शैक्षणिक गतिविधियां, ऊर्जा क्षेत्र, पारिस्थतिक तंत्र, सेवा क्षेत्र आदि को प्रभावित किया।[17]

कोविड–19 का प्रसार लगभग 116 राष्ट्रों में हो चुका है इससे लाखों लोगों की मृत्यु हो चुकी है। इसका सर्वाधिक प्रभाव चीन के वुहान शहर में देखा गया। इसके बाद इटली, ईरान, दक्षिण कोरिया, थाईलैण्ड, वियतनाम, ताइवान सिंगापुर, जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन फ्रांस एवं भारत में व्यापक रूप से पड़ा।[18]

कोविड–19 और भारत की विदेश नीति :

एक राष्ट्र के रूप में भारत ने बाहरी और आंतरिक दोनों तरह की चुनौतियों का सामना किया है जो अब भी चुनौती बनी हुई। एक विकासशील राष्ट्र के रूप में भारत बहुत तेजी से विकास और प्रगति कर रहा है। भारतीय विदेश नीति के सामने मुल चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि भारत, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ उस रूप में जुड़ सके जो समकालीन वास्तविकताओं के अनुरूप और उत्तरदायी हो भारत विश्व के राष्ट्रों के हितों का ध्यान रखने वाला देश है। कोविड–19 महामारी के दौरान इसकी कमियां और इसके मौजुदा स्वरूप की सीमाएं सामने आई है। यह विशुद्ध आर्थिक ऐजेण्डा से संचालित है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जी–20 को अपने संबोधन में कहा था कि वैश्वीकरण को मानव जाति के सामुहिक हितों में आगे बढ़ाना चाहिए और उसकी व्यवस्था, निष्पक्षता, समानता तथा मानवता पर आधारित होना चाहिए। यह केन्द्रित प्रक्रिया होनी चाहिए।[19]

भारत की विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य पड़ौसियों को वरीयता देने की अवधारणा में निहित है। यह पड़ौसी राष्ट्रों के साथ अपने रिश्तों को व्यापक रूप से आगे बढ़ाने और मजबूत करने की हमारी नवीनीकृत प्राथमिकता को रेखांकित करता है। बार–बार होने वाले उच्च स्तरीय आदान प्रदान, संपर्क, आर्थिक

एकीकरण तथा लोगों के बीच संपर्क में महत्वपूर्ण सुधार और भारत के विकास भागीदारी कार्यक्रम में पड़ौसी देशों पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाना जैसे प्रयास पड़ौसी देशों के साथ संबंधो को महत्व देने की मंशा को दर्शाते है। भारत को निरंतर उच्च स्तरीय बातचीत और आर्थिक सांपर्क के द्वारा महामारी के दौरान भी दक्षिण एशिया, और अन्य बातों के साथ–साथ बहुक्षेत्रीय बिम्सटैक संरचना के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई है। लुक ईस्ट नीति को आगे बढाकर उसे एक्टईस्ट नीति कर दिया गया है, जिसके तहत् आसियान देशों के साथ संबंधों को सड़क, समुद्री और हवाई संपर्क में सुधार के माध्यम से मजबूत किया जा रहा है। अपने पूर्वोत्तर राज्यों को इन देशों से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया जा सके। भारत ने कई माध्यमों से आसियान के साथ बातचीत बढ़ाई है और आसियान के सदस्यों के साथ तेजी से बहुक्षेत्रीय संबंध मजबूत कर रहे है। हम पूर्व एशिया, शिखर सम्मेलन और आसियान देशों के रक्षामंत्रियों की बैठक जैसे अन्य प्रारूपों में सक्रियता से काम कर रहें है।[20]

भारत ने कोविड–19 महामारी के दौरान संयुक्त राज्य अमरीका सहित विश्व के अनेक देशों को पैरासीटॉमोल, क्लोरोक्वीन, रेक्डेसिवर जैसी दवाईयाँ, पीपीई किट की आपूर्ति की। कोविड–19 के विरुद्ध विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान 16 जनवरी 2021 को प्रारंभ करने के मात्र 4 दिन बाद ही पड़ौसी देशों – भूटान, मालद्वीव, नेपाल, बांग्लादेश को कोविशिल्ड वैक्सीन की 3.2 मिलियन खुराकें निःशुल्क भेंट करके "वैक्सीन मैत्री" का अग्रदूत बनकर वैश्विक स्वास्थ्य विदेश नीति को नया आयाम प्रदान किया है।

भारत की इस पहल का विश्व समुदाय ने स्वागत किया है। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, मालद्वीव के राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलीह, नेपाली प्रधानमंत्री केपीशर्मा ओली ने भी भारत की इस पहल की सराहना की है। भारत की वैश्विक छवि और प्रतिष्ठा को वैक्सीन मैत्री के माध्यम से बढ़ावा मिला है। अमरीकी विदेश विभाग ने कहा "वैश्विक समुदाय की मदद के लिए भारत अपने फार्मा क्षेत्र का उपयोग करने वाला विश्व का एक सच्चा मित्र है।" विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख टेड्रोस अदनोम घेब्रेयियस ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को "वैश्विक कोविड–19 अनुक्रिया के निमित्त निरंतर समर्थन" के लिए ट्विटर पर धन्यवाद दिया। भारत ने अपने पड़ौसी देशों को मास्क, हेडकवर और यहाँ तक कि आईसीयू वेंटिलेटर तक की आपूर्ति की। दूसरी ओर चीन के प्रयास विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक थे, जिसका उद्देश्य अपने महंगे टीकों को बेचना था। एक रिपोर्ट के अनुसार चीन में निर्मित वैक्सीन की दो खुराकों की कीमत 60 से 150 अमरीकी डॉलर के बीच है। इस बात में नहीं कि भारत के सस्ते और प्रभावी विकल्प ने चीन को झकझोर दिया है।[21]

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि कोविड–19 महामारी एक युगान्तकारी घटना है, अभी भी इस महामारी का प्रकोप जारी है। इसका अन्त अनिश्चित प्रतीत होता है। फिर भी इसके अब तक के घटनाक्रम से स्पष्ट है कि कोविड–19 ने मानव समाज के प्रत्येक पहलु को प्रभावित किया है। मानव जीवन के सभी पक्षों जिसमे आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आदि पर इसका व्यापक प्रभाव देखने को मिल रहा है। कोविड–19 ने विश्व के विकसित, विकासशील तथा पिछड़े राष्ट्रों को अपने चपेट में ले लिया है किन्तु अब भारत द्वारा कोविड–19 की विकसित वैक्सीन–कोविशील्ड व कोवैक्सीन, रूस द्वारा विकसीत स्पुतनिक–V तथा अमेरिका द्वारा विकसित मार्डना के आने के बाद उम्मीद की नई किरण जागी है फिर भी मानव समाज को सावधान व सजग रहते हुए कोविड–19 के साथ रहने की आदत डालनी होगी।

संदर्भग्रंथ सूची :

01. प्रतियोगिता दर्पण (मासिक पत्रिका), अगस्त 2020 पृ. क्र.– 731
02. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), अप्रैल–मई 2020 पृ. क्र.– 6
03. हरिभूमि (दैनिक समाचार पत्र), 30 मई 2021
04. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), नवम्बर 2020, पृ. क्र.– 5
05. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), अप्रैल–मई 2020 पृ. क्र.– 6
06. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), नवम्बर 2020, पृ. क्र.– 5
07. प्रतियोगिता दर्पण (मासिक पत्रिका), जून–जुलाई, 2020 पृ. क्र.– 79
08. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), जनवरी 2021 पृ. क्र.– 83

09. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), जनवरी 2021 पृ. क्र.– 82
10. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), जनवरी 2021 पृ. क्र.– 83
11. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), जनवरी 2021 पृ. क्र.– 84
12. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), मार्च 2021 पृ. क्र.– 10
13. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), मार्च 2021 पृ. क्र.– 11
14. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), दिसंबर 2020 पृ. क्र.– 15
15. प्रतियोगिता दर्पण (मासिक पत्रिका), अप्रैल, 2021 पृ. क्र.– 173
16. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), मार्च 2021 पृ. क्र.– 10
17. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), नवम्बर 2020 पृ. क्र.– 7
18. अरिहंत समसामयिकी महासागर (मासिक पत्रिका), अप्रैल–मई 2020 पृ. क्र.– 8
19. योजना (मासिक पत्रिका), नवम्बर 2020 पृ. क्र.– 6
20. योजना (मासिक पत्रिका), अक्टूबर 2020 पृ. क्र.– 7,8
21. प्रतियोगिता दर्पण (मासिक पत्रिका), मार्च, 2021 पृ. क्र.– 63